ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं कि दुनिया एक है; परन्तु दो पार्ट में है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। नई दुनिया को सतयुग कहा जाता। फिर वो ही दुनिया जब पुरानी होती है तो कलियुगी दुनिया कहा जाता है। नए महल में सुख होता है। वो ही जब पुराना हो जाता तो उसमें दुख होता है। इसलिए फिर पुराने महल को टोड़ा जाता है। सतयुग में पुण्य आत्माएँ रहती, कलियुग में पापात्माएँ रहती हैं। पापात्माएँ ही पुकारती हैं कि हे पतित—पावन परमपिता **P.** हमको इस पाप की, दुख की दुनिया से वहाँ ले चल जहाँ सुख .....। तुम जानते हो कि दुःख देने वाले हैं यह 5 विकार। 10 शीश वाली माया जिसको ही रावण कहा जाता। वो सबसे बड़ा दुश्मन है। भगवान समझाते हैं काम विकार सबसे बड़ा शत्रु है। वो आदि—मध्य—अंत दुख देते हैं अर्थात् नर्क में ले जाते हैं। क्रोध के लिए नहीं कहेंगे कि आदि—मध्य—अन्त दुख देते हैं। काम है सबसे बड़ा शत्रु। इसलिए कहा जाता है काम महाशत्रु को ज्ञान तलवार से मारो अथवा जीतो। इनको जीतने से ही तुम अमरलोक में जा सकते हो। सेकण्ड नम्बर में है क्रोध। वो भी ..... है। क्रोध से एक/दो को दुख पहुँचाते हैं, यह है मुख की कर्मणा। वो कुख की कर्मणा। अपन लिखते भी हैं वो है कुखवंशावली, अपन हैं मुख की वंशावली। अपन को शिक्षा मिलती है काम को जीतो। यह महा दुश्मन है। इन 5 विकारों रूपी ग्रहण लगने से ही हम काले बन पड़े हैं। जैसे सूर्य ग्रहण लगता है ना। वो है हद का ग्रहण। हमको लगा है बेहद का ग्रहण। आहस्ते2 ग्रहण लगते2 अब हम पूरे काले ..... हो गए हैं। बाप समझाते हैं तुमको इन 5 विकारों ने काला किया है। काले मुँह वाले बन्दर बन जाते हैं अथवा काम अग्नि में तप लाल बन्दर हो जाते हैं। अब फिर बाप आप शक्ति दे इन विकारों पर जीत पहनाते हैं। यह है योग शक्ति। पहले तो नम्बरवन शत्रु पर जीत पानी है। बाप के बच्चे बनेंगे तो निश्चय होगा हम सब आपस में ब्राह्मण—ब्राह्मणियाँ, भाई—बहन हैं। शिवबाबा के पौत्रे—पौत्रियाँ हुए। ..... भी नज़दीक वाले संबंध में कब शादी नहीं कराते हैं। लॉ नहीं है। हम तो बहुत नज़दीक वाले हो गए। विकार की दृष्टि बाहर वालों में जावेगी, बाहर वालों से सगाई कराते हैं। कुटुम्ब के अंदर नहीं। तो हमारा भी यह कुटुम्ब है। भाई—बहन ठहरे। यह है युक्ति काम पर जीत पाने की। हम शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। कुदृष्टि हम कैसे रखेंगे। बाबा कहने वाले की आपस में कुदृष्टि रहने से यह तो क्रिमिनल एसॉल्ट हो जावेगा। उनमें भी फिर उत्तम—मध्यम—कनिष्ठ हैं। कोई को सिर्फ मंसा संकल्प आते हैं वो है उत्तम। कोई को फिर थोड़े संकल्प आते हैं, प्यार कर लेते, बाकी नगन नहीं होते। यह हुआ मध्यम। कर्मेन्द्रियों के वश हो जाना वो है कनिष्ठ। धक्का खाय लिए। सर्प ने पूरा डस लिया। बाप समझाते हैं इन काम विकार पर पूरी जीत पानी है। भीती भी बहुत है। 5 विकारों पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनते हो। कितना यह शुद्ध लोभ है। लोभ बिगर तो कोई चल न सके। पढ़ाई भी लोभ है। हम यह पढ़ेंगे, इतना धन कमावेंगे यह लोभ है ना। एक होता है हद का लोभ, दूसरा बेहद का। लोभ में विकार नहीं कहेंगे। मोह में विकार है। देह अभिमानी बनने से ही यह सभी विकार आते हैं। नष्टोमोहा भी बनना चाहिए। मनुष्य को मरने समय कहते हैं राम2 कहो। सबसे बुद्धि हटाए एक को याद करो। नष्टोमोहा हो जाओ। कहते हैं ना अन्त काल जो स्त्री सिमरे..... फिर जो अन्त काल ना॰ को सिमरे वो तो ऊँच पद पावे। बाबा भी कहते नष्टोमोहा हो जाओ। एक बाबा को याद करो। तुम बीमार तो नहीं हो जो घड़ी2 कहा जाए। तुम तो सब तंदुरुस्त हो। उसी समय सिर्फ राम2 कहने से भी कोई फायदा थोड़े ही होता है। मोह भी तो नुकसान कारक है। एक बाप से ही मोह रखना है। लोभ का भी समझाया। ..... बिगर तो काम न चले। लोभ में क्रोध भी आ जाता है।

एक/दो का खून भी कर लेते हैं। अपना है शुद्ध लोभ कि हम ..... यह तो अच्छा ही है। ..... ऊँच पद है। बाबा कहते हैं (चार लाइन मिटी हुई हैं।).....
.....
.....
.....
.....
..... से याद करो। भगवान को याद करते हैं। भगवान नीच थोड़े ही ..... वो तो है ऊँच ते ऊँच ..... जिसको भक्तिमार्ग में सभी याद करते हैं। भक्तों को भगवान तो मिलना है। ब्र.वि.शं. पास जाने लिए भक्ति नहीं करते हैं। भक्ति करते हैं भगवान से मिलने लिए। फिर कह देते ईश्वर सर्वव्यापी है। तो ..... जाती। अगर सर्वव्यापी है फिर ऊपर मुँह कर याद क्यों करते। ज़रूर वो ऊपर है ना। कहते भी हैं कि भगवान को घर बैठे आए ज्ञान देना है। ज्ञान का सागर। मनुष्य फिर इस सूर्य को देवता समझते हैं। बाबा .... .... देवताएँ हैं ही 3 ब्र.वि.शं. 'व...' वो है देवलोक। यह है मनुष्यलोक। और कोई को हम देवता नहीं कहेंगे। सूर्य–चंद्रमा भी देवता नहीं हैं; लेकिन यह क्यों कहते हैं; क्योंकि जो सदैव सुख देते हैं उनको देवता कहा जाता है। दुख देने वाले को डेविल कहा जाता है। तो यह सूर्य–चाँद भी सुख देने वाले हैं। अच्छी सेवा करने वाले को देवता कहा जाता है। ब्र.वि.शं. द्वारा भी बाबा सबको सुख देते हैं। घर में भी अच्छे बच्चे होते हैं तो कहा जाता है यह तो जैसा देवता है। देवताएँ हैं ही सुख देने वाले। असुर है दुख देने वाले। तो अब बाप कहते हैं मेरे लाडले बच्चे इन माया पर जीत पहनो। यह भारत का सहज योग राजयोग है जो फिर से मैं तुमको सिखलाता हूँ। सन्यासी यह राजयोग सिखला नहीं सकते। यह ..... सतयुग का। वहाँ महान पवित्र आत्माएँ रहती हैं। राजयोग है ही सतयुग में। तो ज़रूर सतयुग की स्थापना चाहिए। वो मनुष्य तो नहीं करेंगे। वो क्रियेटर ही करेंगे। नई दुनिया रचने लिए ज़रूर पुरानी दुनिया में आना ही पड़े। तो अब बाप कहते हैं मैं आया हूँ। मैं कल्प आए सतयुगी दुनिया की स्थापना कर भारत को सच्चा स्वराज्य देता हूँ। हम तुम हूबहू वो ही हैं। तुम भी कहते हो तुम्हीं से बैठूँ, खाऊँ, तुम पर बलिहार जाऊँ। यह भारत में ही गाया जाता है। यह बेहद का खेल है। जो पास्ट होता जाता है उनकी बैठ कहानियाँ बनाते हैं। संगमयुग की कहानी में थोड़ी भूल कर दी है। ..... पर बैठ कहानियाँ बनाते हैं। कोई में भी सार न रहा है। वेद–शास्त्र, जप–तप आदि कोई में भी सार न है। सच्चा सुख तो स्वर्ग में ही मिलता है। वहाँ देवताओं का राज्य था। कल्प की आयु लाखों वर्ष कहने से कहाँ का कहाँ सतयुग आदि को उड़ाए ले गए हैं। वास्तव वो धर्मयुद्ध तो है ही यह और फिर उनसे वृद्धि होती है टाल–टालियाँ..... और कोई का नाम–निशान नहीं। खुद भी सभी अपने प्रीसेप्टर को ही करते हैं। भारतवासियों ने कृष्ण का नाम उल्टा डाल दिया है। अब बाबा सुल्टा समझाते हैं। उल्टा(सुल्टा) समझने से हम स्वर्गवासी बन रहे हैं।

बाबा समझाते हैं विकारों पर पूरी जीत पानी है। हमको ..... है शुद्ध। ... समझते हैं भारत के मालिक बने। मनुष्य धन का लोभ करते हैं तो उसमें पाप आदि कर लेते हैं। राजाई लेने लिए लड़ाई में पाप आदि कितने करते हैं। हम कुछ भी नहीं करते। बाबा ने ड्रामा में कितनी अच्छी युक्ति ..... है। बुद्धियोग बल से हम राज्य प्राप्त करते हैं। लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। .....

गई। योगी का योग कोई से तो होगा ना। कहते हैं हमारा ब्रह्म से योग है। फिर भी कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। तो फिर भी दो चीज़ें हुई ना। साधना ज़रूर किसी की जाती है जिसको ..... समझते हैं। कहते हैं उनसे निकले हैं फिर लीन हो जावेंगे। तो भी दो चीज़ें हो गई ना; परन्तु उस बाप का पूरा ज्ञान नहीं है। यह भी ड्रामा में सब नूँध है। ड्रामा में राँग भी है। तो राइट भी है। पावन भी है, तो पतित भी है। तो ड्रामा अनुसार पतित भी बनना ही है। तुम जानते हो हम देवता थे फिर पतित कैसे बने, यह ड्रामा है। ड्रामा को समझ कर ही फिर पुरुषार्थ किया जाता है। पुरुषार्थ अर्थात कर्म। कर्म सन्यास .....। घरबार छोड़ना अक्षर ही .... रांग है। यह अक्षर ही सब झूठे हैं। यह भी प्वाइंट लिखनी पड़े। सन्यास अक्षर राइट है। घरबार छोड़ना भी राइट है; परन्तु कर्म सन्यास अक्षर रांग है। (बाबा को खांसी हुई।) देखो, खांसी ..... बज गई है। विकार में भी मनुष्य चित्ती बन जाते हैं। हम फिर निर्विकारी बनने में चित्ती बनते हैं। तीखा पुरुषार्थ ज़रूर करना है। वो फिर पूरा विकारी बनने लिए तीखा पुरुषार्थ करते हैं। हमको फिर निर्विकारी बनने और अपना राज्य–भाग्य लेने चित्ता पुरुषार्थ करना है। उन्हों का गिरने लिए चित्ता पुरुषार्थ है। हमारा चढ़ने लिए चित्ता पुरुषार्थ है। मायाजीत बनने लिए हम चित्ता पुरुषार्थ करते हैं। डायरैक्शन तो सब मिलती हैं ना। बुद्धि से काम लेना चाहिए।

ऐसे भी नहीं है कि यहाँ आकर सब बैठ जावेंगे। ऐसे तो दुनिया में गरीब आदि बहुत हैं। ऐसे भी आवेंगे जो कहेंगे हम आपके दर पर आए हैं। आपको ऐस्लम देना है। गवर्नमेन्ट भी ऐस्लम देती है। क्या भगवान नहीं देंगे। ऐसे मस्त बहुत आवेंगे तो बच्चों को शुद्धमार्ग और चित्ता पुरुषार्थ करना चाहिए। और संग बुद्धि का योग तोड़ तुम साथ संग जोड़ें। और जब तोड़कर फिर जोड़ा है तो ठीक से तोड़ भी निभाना है। तो अन्त मति गति हो जावेगी। कमाई में भी चित्ता पुरुषार्थ किया जाता है। हम किसी को अगर थोड़ा पैसा देवें तो वो 8 घंटे बदली 12 घंटे भी काम करेंगे। कहेंगे, काम में चित्ते है। तुम्हारी भी बहुत कमाई है। बाबा कहते हैं अधिक कमाई करनी है तो सर्विस के लिए चित्ते बन जाओ। बहुतों को स्वर्गवासी बनाने का पुरुषार्थ करो। जितना2 तुम योग में रहेंगे तो मनुष्यों का भी बुद्धियोग कुछ न कुछ अच्छा बनता जावेगा। तुम्हारी बुद्धिबल का वायुमंडल ठीक करता जावेगा। फिर तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। बहुत सेन्टर्स खुलते जावेंगे। दिन–प्रतिदिन सुधरना होता है। कोई तो फिर गिरते भी हैं। ग्रहचारी है। काम से थप्पड़ खा गिर पड़ते हैं कोई तो गिरकर फिर चढ़ते हैं। कोई तो बिल्कुल खलास हो जाते हैं या नाम–रूप में फंस पड़ते हैं या कोई उल्टे कर्म हो जावेंगे। न बतलाने से वो गुप्त गिरते रहते हैं। यदि कोई समझते हैं कि फलाना गिर रहा है तो झट बतलाना चाहिए तो उनको सावधानी मिलेगी। यदि नहीं बतलाते तो जैसे वो खुद निमित्त बनते हैं उनका बेड़ा गर्क करने का। हमको तो सबका कल्याण करना है। ऐसे नहीं गिरने दो। समझाना है तुम पर कड़ी ग्रहचारी है, गिर रहे हो। ... हो तो भी उनको उठाना चाहिए। उसी को ही सच्चा मित्र कहा जाता है। देखते समझते हुए उल्टे काम में किसी को पुष्टि न देनी चाहिए। कर्मेन्द्रियों को अलाउ न करना चाहिए देखने का। आँख कर्म–इंद्री सबसे बड़ा धोखा देने वाली है (सूरदास का मिसाल)। यहाँ आँख निकालने की बात नहीं। अपने को बचाना है। आँख ..... देनी चाहिए। देखते रहेंगे तो फँस पड़ेंगे। अच्छा, ॐ।।